**Join Telegram-**
https://t.me/bhartibhandar

**Our Website-**
https://thehindipage.com/blog/

**Join Telegram-**
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

**Our Youtube Channel-**
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

# कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी - टेस्ट-9
# भय-रामचन्द्र शुक्ल
# आदर्श उत्तर कुंजी
# पूर्णांक 20

**प्रश्न 1. भीरुता किसको कहते हैं ? पुरानी प्रकृति की और नवीन तरह की भीरुता का विश्लेषण कीजिए।**

उत्तर: स्वभावगत भय को भीरुता कहते हैं। भय की आदत बन जाने पर उसको भीरुता कहा जाता है। इसको कायरता भी कहते हैं। भीरुता स्त्री-पुरुष दोनों में पाई जाती है। पुरुषों को स्वाभाविक रूप से साहसी माना जाता है। उनकी भीरुता निंदनीय होती है परन्तु स्त्रियों की भीरुता रसिकों के मनोरंजन का विषय होती है। भीरु व्यक्ति में कष्ट सहने की क्षमता नहीं होती तथा उस कष्ट से मुक्ति का पूर्ण विश्वास भी उसको नहीं होता। भूतों से डरना तथा पशुओं से डरना भी भीरुता है। भीरुता निंदनीय होती है किन्तु धर्म भीरुता प्रशंसनीय मानी जाती है। इसको पुरानी चाल की भीरुता कह सकते हैं।
भीरुता नवीन प्रकार की भी होती है। यह जीवन के अन्य अनेक व्यापारों में दिखाई देती है। इस प्रकार की भीरुता में सहन करने की क्षमता और अपनी शक्ति में अविश्वास छिपा रहता है। कोई व्यापारी कभी-कभी किसी नई वस्तु का व्यापार शुरू नहीं करता। उसको इसमें आर्थिक हानि होने का भय लगता है। यह व्यापारी की भीरुता है। उसमें आर्थिक नुकसान को सहने की क्षमता तथा अपने व्यापार कौशल पर अविश्वास होता है। इसी प्रकार कोई विद्वान पुरुष जब अपने विद्या-बुद्धि की शक्ति पर अविश्वास होने के कारण और मानहानि के डर से किसी के साथ शास्त्रार्थ से बचता है तो इसको उसकी भीरुता ही माना जाएगा। ये नवीन प्रकार की भीरुता के रूप हैं।

**प्रश्न 2. असभ्य तथा जंगली जातियों में भय अधिक होता है क्यों? उनके समाज में देवताओं की पूजा में भये की भूमिका पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर: असभ्य और जंगली जातियों में भय अधिक होता है। जंगली लोगों का परिचय-क्षेत्र बहुत सीमित होता है। ऐसी अनेक जातियाँ हैं जिनमें कोई व्यक्ति 20-25 से अधिक लोगों को नहीं जानता। उसे दस-बारह कोस दूर रहने वाला कोई जंगली मिल जाए और उसको मारने दौड़े तो वह दौड़कर अपनी रक्षा कर लेता है। यह रक्षा तत्कालीन तथा सर्वकालीन भी हो सकती है। परिचय का सीमित होना ही उनके भय का कारण होता है।
जंगली जातियों में भय की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। वे जिससे डरते हैं , उससे रक्षा के लिए ही उसका सम्मान भी करते हैं। उनके देवता भय के कारण ही कल्पित होते हैं। वे कष्ट से रक्षा के लिए किसी शक्ति की कल्पना कर लेते हैं तथा उसकी पूजा करते हैं और उससे प्रार्थना करते हैं कि वह उनको कष्ट से बचाए।

भय और भय उत्पन्न करने वाले का सम्मान करना असभ्यता का सूचक है। पूजा-पद्धति के जन्म में भी भय की भावना का प्रमुख स्थान है। देवता शक्तिशाली होते हैं तथा वे किसी को भी पीड़ा पहुँचा सकते हैं। इस पीड़ा से बचने के लिए ही उनका सम्मान किया जाता है। उनको प्रसन्न रखा जाता है तथा उनकी पूजा की जाती है। यही कारण है कि सभ्यता और शिक्षा के विकास के साथ धर्म के प्रति लोगों की रुचि कम होती जा रही है।

**प्रश्न 3. "अब मनुष्यों के दु:ख का कारण मनुष्य ही है।" शुक्ल जी के इस कथन में अन्तर्निहित भाव स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर: पहले जब सभ्यता और शिक्षा का लोगों के बीच प्रसार नहीं हुआ था, तब मनुष्य को अनेक अपरिचित प्राणियों से कष्ट मिलने का भय सताता था ! असभ्य तथा आरक्षित लोग अधिक डरते हैं। जंगली और असभ्य लोग अपरिचित मनुष्य से भी डरते हैं। उनसे सताये जाने की भावना उनके मन में विद्यमान होती है।

पहले लोग कुछ कल्पित शक्तियों से डरते थे। भूत-प्रेतों का डर असभ्य तथा अशिक्षित लोगों में पाया जाता था।धर्म के कल्पित देवताओं की शक्ति भी उन्को दु:ख का कारण लगती थी और वे उनसे डरते थे। पशुओं से भी पहले के लोग भयभीत होते थे। अब सभ्यता के विकास के साथ स्थिति बदल चुकी है। अब लोगों में भूतों के प्रति भय प्राय: नहीं रहा है। पशुओं से भी वह अब नहीं डरते। अब तो धार्मिक देवी-देवताओं से भी उनको डर नहीं लगता। अब लोग यदि किसी से डरते हैं तो वह मनुष्य ही है। मनुष्यों के दु:ख का कारण अब मनुष्य ही है मनुष्य दूसरे मनुष्य, एक जाति दूसरी जाति तथा एक देश दूसरे देश को पीड़ित करता है तथा उसका शोषण करता है। मनुष्य को जबरदस्ती अपनी सम्पत्ति छीने जाने का भय तो नहीं रहा है परन्तु कानूनी दाव पेच अपनाकर अपनी सम्पत्ति से वंचित किए जाने का भय अब मनुष्य में बढ़ गया है। सबल देशों द्वारा निर्बल देशों का शोषण होने से भी मनुष्य के प्रति भय का भाव पनपता है।

आज मनुष्य ही दूसरे मनुष्य को दु:ख पहुँचाता है। वही मनुष्य के दु:ख का कारण है। यही शुक्ल जी के कथन में अन्तर्निहित भाव है।

**प्रश्न 4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए (कोई दो) 2×4= 8**

**(1)** भय का विषय दो रूपों में सामने आता है- असाध्य रूप में और साध्य रूप में। असाध्य विषय वह है जिसका किसी प्रयत्न द्वारा निवारण असम्भव हो या असम्भव समझ पड़े। साध्य विषय वह है जो प्रयत्न द्वारा दूर किया या रखा जा सकता हो। दो मनुष्य एक पहाड़ी नदी के किनारे बैठे या आनन्द से बातचीत करते चले जा रहे थे। इतने में सामने से शेर की देहाड़ सुनाई पड़ी। यदि वे दोनों उठकर भागने, छिपने या पेड़ पर चढ़ने आदि का प्रयत्न करें तो बच सकते हैं। विषय के सा य या असाध्य होने की धारणा परिस्थिति की विशेषता के अनुसार तो होती ही है पर बहुत कुछ मनुष्य की प्रकृति पर भी अवलम्बित रहती है। क्लेश के कारण का ज्ञान होने पर उसकी अनिवार्यता का निश्चय अपनी विवशता या अक्षमता की अनुभूति के कारण होता है। यदि यह अनुभूति कठिनाइयों और आपत्तियों को दूर करने के अनभ्यास या साहस के अभाव के कारण होती है , तो मनुष्य स्तम्भित हो जाता है और उसके हाथ-पाँव नहीं हिल सकते। पर कड़े दिल का या साहसी आदमी पहले तो जल्दी डरता नहीं और डरता भी है तो सँभलकर अपने बचाव के उद्योग में लग जाता है। (पृष्ठ संख्या 37)

**सन्दर्भ व प्रसंग-** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' में संकलित 'भय' शीर्षक निबन्ध से उद्धृत है। इसके रचयिता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। किसी भावी दु:ख के कारण का सामना होने से मन में जो आवेगपूर्ण मनोभाव उत्पन्न होता है , उसको भय कहा जाता है। यह दु:ख से बचने के लिए प्रयत्नशील होने की प्रेरणा देता है। भय के लिए उसका कारण निर्दिष्ट होना जरूरी नहीं होता।

**व्याख्या-** लेखक 'भय' नामक मनोविकार का विवेचन कर रहा है। वह बता रहा है कि भय दो तरह का होता है। एक तो वह जिससे प्रयत्न के द्वारा बचा जा सके। इसको साध्य भय भी कहते हैं। दूसरा वह जो असाध्य होता है , प्रयत्न करके भी उस भय का निवारण नहीं हो पाता। यह अनिवार्य होता है। इसको अग्रलिखित उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। दो मनुष्य किसी पहाड़ी नदी के किनारे बैठे हैं अथवा जा रहे हैं। वे प्रसन्नतापूर्वक बातें करते चल रहे हैं कि अचानक सामने से शेर की दहाड़ सुनाई देती है। शेर से बच सकते हैं। यह भय साध्य है। भय साध्य है अथवा असाध्य है, इस बात का निश्चय परिस्थिति के अनुसार होता है अथवा यह मनुष्य के स्वभाव पर निर्भर करता है। किसी दु:ख का पता चलने पर यदि मनुष्य उसके निवारण में स्वयं को असमर्थ तथा अशक्त अनुभव करता है तो वह भय अनिवार्य माना जाता है। जिस मनुष्य में साहस नहीं होता या जिसको संकटों से जूझने का अभ्यास नहीं होता , उसी को भय अनिवार्य प्रतीत होता है। उसके हाथ-पाँव काम नहीं करते और वह नि:चेष्ट हो जाता है। परन्तु साहसी और कठोर दिल को मनुष्य जल्दी भयभीत नहीं होता। यदि होता भी है तो शीघ्र सावधान हो जाता है तथा भय से बचने का उपाय करने लगता है।

**विशेष-**

(i) प्रस्तुत गद्यांश में भय का प्रकार बताया गया है।
(ii) भय का असाध्य होना मनुष्य के स्वभाव तथा परिस्थिति पर निर्भर करता है।
(ii) भाषा तत्सम शब्द प्रधान, गम्भीर तथा साहित्यिक है।
(iv) शैली विचार-विवेचनात्मक है।

(2) एक ही प्रकार की भीरुता ऐसी दिखाई पड़ती है जिसकी प्रशंसा होती है। वह धर्म-भीरुता है। पर हमे तो उसे भी कोई बड़ी प्रशंसा की बात नहीं समझते। धर्म से डरने वालों की अपेक्षा धर्म की ओर आकर्षित होने वाले हमें अधिक धन्य जान पड़ते हैं। जो किसी बुराई से यही समझकर पीछे हटते हैं कि उसके करने से अधर्म होगा, उसकी अपेक्षा वे कहीं श्रेष्ठ हैं जिन्हें बुराई अच्छी ही नहीं लगती। (पृष्ठ संख्या 38)

**सन्दर्भ व प्रसंग-** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' में संकलित ' भय' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है। इसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। भय की भावना को भीरुता कहते हैं। भीरुता पुरुषों का दुर्गुण माना जाता है। केवल धर्म भीरूता ही प्रशंसा का विषय होती है।

**व्याख्या-** लेखक कहता है कि भीरुता प्रशंसनीय नहीं है। पुरुषों में इसको दुर्गुण माना जाता है तथा इसकी निन्दा होती है। संसार में एकमात्र भीरुता धर्म-भीरुता अर्थात् धर्म से डरना ही है , जिसकी प्रशंसा की जाती है। लेखक की दृष्टि में धर्म से डरना कोई अच्छी बात नहीं है। यह प्रशंसनीय भी नहीं है। धर्म से डरने वाले मनुष्य की तुलना में वह मनुष्य अधिक अच्छा है जो धर्म की ओर आकर्षित होता है तथा धर्म का आचरण करता है। कोई मनुष्य किसी काम को अच्छा नहीं समझता और उसको अधर्म समझकर उससे बचता है

तो वह प्रशंसा का पात्र नहीं है। उसकी तुलना में वह मनुष्य ज्यादा अच्छा है जिसको बुराई अच्छी नहीं लगती।

**विशेष-**

(i) संसार में धर्म-भीरुता की प्रशंसा होती है किन्तु लेखक के मत से यह ठीक बात नहीं है।
(ii) लेखक का मत है कि धर्म से डरना नहीं अपितु धर्म की ओर आकर्षित होना अच्छी बात है।
(iii) भाषा सरल तथा विषय के अनुकूल है।
(iv) शैली विवेचनात्मक है।

(3) सभ्यता की वर्तमान स्थिति में एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से वैसा भय तो नहीं रहा जैसा पहले रहा करता था, पर एक जाति को दूसरी जाति से, एक देश को दूसरे देश से, भय के स्थायी कारण प्रतिष्ठित हो गए हैं। सबल और सबल देशों के बीच अर्थ-संघर्ष की, सबल और निर्बल देशों के बीच अर्थ-शोषण की प्रक्रिया अनवरत चल रही है; एक क्षण का विराम नहीं है। इस सार्वभौम वणिग्वृत्ति से उसका अनर्थ कभी न होता यदि क्षात्रवृत्ति उसके लक्ष्य से अपना लक्ष्य अलग रखती। पर इस युग में दोनों का विलक्षण सहयोग हो गया है। वर्तमान अर्थोन्माद को शासन के भीतर रखने के लिए क्षात्रधर्म के उच्च और पवित्र आदर्श को लेकर क्षात्रसंघ की प्रतिष्ठा आवश्यक है। (पृष्ठ संख्या 39-40)

**कठिन शब्दार्थ-** प्रतिष्ठित = स्थापित। अर्थ-संघर्ष = आर्थिक प्रतिस्पर्धा। शोषण = दूसरे के अधिकार छीनना, धन-सम्पत्ति का अपहरण। प्रक्रिया = कार्य। अनवरत = निरन्तर , लगातार। विराम = रोक। सार्वभौम = विश्वव्यापी। वणिग्वृत्ति = व्यापार-कार्य , व्यापार द्वारा लाभ कमाना। अनर्थ = हानि। क्षात्रवृत्ति = क्षत्रिय अर्थात् शासन का कर्तव्य , शासन द्वारा शोषण तथा अत्याचार रोकना। लक्ष्य = उद्देश्य। विलक्षण = अनोखा। अर्थोन्माद = आर्थिक पागलपन , धन कमाने के उचित-अनुचित तरीके अपनाना। शासन = नियन्त्रण। प्रतिष्ठा = स्थापना, सम्मान॥

**सन्दर्भ व प्रसंग-** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' में संकलित 'भय' शीर्षक निबन्ध से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध निबन्धकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। सभ्यता के विकास ने समाज में भय कम कर दिया है। भय का रूप बदल गया है। आज कोई व्यक्ति किसी को सीधे तरीके से दुःख नहीं देता। दुःख देने के छद्म रूप विकसित हो गए हैं। एक देश दूसरे पर आक्रमण तो नहीं करता किन्तु दूसरे देश का व्यापार के माध्यम से शोषण करता है। समाज में भी एक वर्ग दूसरे का शोषण करता है।

**व्याख्या-** लेखक बता रहे हैं कि संसार में सभ्यता का तेजी के साथ विकास हो गया है। इस कारण एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से पहले की तरह का डर नहीं रहा है। परन्तु संसार में अब भी एक जाति दूसरी जाति को, एक देश दूसरे देश को सताता है और डराता है। विश्व में एक देश को दूसरे देश तथा एक जाति को दूसरी जाति से भयभीत होने के स्थायी कारण स्थापित हो गए हैं। दो बलेवान देशों में प्रबल आर्थिक स्पर्धा चल रही है। एक शक्तिशाली देश दूसरे निर्बल देश का व्यापार आदि आर्थिक उपायों से शोषण करता है। ये बातें संसार में निरन्तर चल रही हैं। इनसे क्षणभर की भी मुक्ति नहीं हो पाती। व्यापार द्वारा लाभ कमाने की यह प्रवृत्ति विश्वव्यापी बन चुकी है। तथा ऐसे नियम बनाए गए हैं कि निर्धन और अविकसित देश सबल और धनवान देशों के आर्थिक दोहन से बच नहीं पाते। इस व्यापारी-प्रवृत्ति के साथ देशों की सरकारें भी मिल गई हैं। आर्थिक क्रियाओं द्वारा शोषण का लक्ष्य तय कर

लिया गया है। शासन सत्ता और व्यापारी वर्ग अर्थात् पूँजीपति वर्ग का उद्देश्य एक ही हो गया है। विश्व में यह जो आर्थिक पागलपन फैला है। व्यक्ति और देश धन के पीछे नैतिकता आदि को छोड़कर भाग रहे हैं। इस पर नियन्त्रण कठोर और पवित्र शासन व्यवस्था द्वारा ही हो सकता है। क्षत्रिय धर्म अर्थात् प्रशासन का उच्च आदर्श बनाए रखने से ही संसार को पूँजीवादी शोषण से बचाया जा सकता है।

**विशेष-**

(i) लेखक का कहना है कि संसार में एक देश दूसरे देश का व्यापार आदि आर्थिक क्रियाओं से शोषण कर रहा है।

(ii) देशों की शासन सत्ता भी आर्थिक शोषण में उनकी साझीदार है तथा उनको संरक्षण प्रदान करती है।

(iii) संसार में धन-सत्ता अत्यन्त प्रबल है। लोग तथा देश धन के पीछे पागल हो रहे हैं। नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है।

(iv) भाषा तत्सम शब्द प्रधान , प्रवाहपूर्ण तथा साहित्यिक है।

(v) शैली विचारात्मक तथा विवेचनात्मक है।

**इस प्रश्न-पत्र की**
**आदर्श उत्तर-कुंजी आप**
**03:00 बजे बाद इस लिंक**
**https://tinyurl.com/y66j6z98**
**से डाउनलोड कर सकते हैं।**

**कक्षा 12 (अनिवार्य हिन्दी - सृजन) परीक्षा की दृष्टि से सरल व आसान व्याख्या एवं हल प्रश्न उत्तर सहित Free PDF Download इस से कीजिए-**
**https://tinyurl.com/y6tpcbsp**

**Join Telegram-**
**https://t.me/bhartibhandar**

**Our Website-**
**https://thehindipage.com/blog/**

**Join Telegram-**
**https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria**

**Our Youtube Channel-**
**https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg**